[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3665

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगों की भाषा

डॉ. संध्या जैन
श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य, महाविद्यालय, इन्दौर

''रंग जब पास–पास होते हैं
रूह तक कैनवास होते हैं।''

रंगों की अपनी भाषा है। रंग ही हमारा जीवन हैं। जीवन के विविध क्षेत्रों में ये रंग अपनी छटा बिखेरते हैं। खान–पान, रहन–सहन, पूजा–पाठ, धर्म–कर्म सभी तो विविध रंगों से जुडे हुए हैं।दुनिया के इस रंगमंच पर हर इंसान किसी–न–किसी रंग में रंगा हुआ है। रंगों की अनुभूति देखने व स्पर्ष करने से होती है।रंगों के बिना हमारा जीवन ठीक वैसा ही है, जैसे प्राण बिना शरीर । प्रकृति सौंदर्य में जहाँ ये रंग चार चाँद लगाते हैं वहीं मानव जीवन को भी सरस, सुखद व रंगीन बना देते हैं ।आबाल वृद्ध रंगों से वस्तुओं को पहचान लेता है। सात रंगों से निर्मित इन्द्रधनुष के रंगों की छटा हमारे मन को बहुत आकर्षित करती है। सूर्य की लालिमा हो, अंतरिक्ष की नीलाभा हो, मेघों का श्याम रंग हो या पर्वतों की श्रृंखला बर्फीली सफेद चादर ओढ़े हुए हो – सभी का अद्भुत सौंदर्य हमें मोहित कर लेता है।

प्रत्येक रंग की अपनी भाषा होती है। ये मौन एवं प्रभावी अभिव्यक्ति देते हैं। ये हमारे तन और मन दोनों को भीगो देते हैं, रससिक्त कर देते हैं। प्राचीन काल से ही रंग कला में भारत का विषेष योगदान रहा है। प्रारंभ में लोग प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते थे। आजकल कृत्रिम रंगों का प्रयोग जोरों पर है। इतना ही नहीं रंगों की अपनी–अपनी हजारों छवियाँ (षेड्स) हैं। ये छवियाँ ही मानव हृदय की भाव एवं भाषा की अभिव्यक्ति हैं।

रंगों की भाषा, चरित्र, गहराई, रहस्य आदि जानने हेतु प्रकृति का सामीप्य होना चाहिए। हरे रंग का कपडा होता है, हरे रंग का कागज़ भी होता है, पर प्रकृति के हरे–हरे पत्ते न जाने कितनी छवियों (षेड्स) को व्यक्त कर देते हैं। यही कारण है कि यह रंग कुदरत व जीवन का प्रतीक है। प्रकृति की खूबसूरती है यह रंग। हमें ताजगी व प्रसन्नता का अहसास कराता है। इसी कारण आँख खराब होने पर या वृद्ध लोगों के मोतियाबिंद के ऑपरेषन के बाद डॉक्टर आँखों पर हरी पट्टी लगाते हैं ।मानवी गुणधर्म के आभासी बोध के अनुसार नीला रंग आषाओं का प्रतीक है। जहाँ ये शांति, ठंडक प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर मानव की महत्वाकांक्षा, आकर्षण और शाहीपन को भी दर्षाता है।यह (नीलांबर) विषालता व उच्चता के भाव को समाए है। प्राथमिक रंगों में लाल रंग की भी भाषिक शक्ति महत्वपूर्ण है। नव ब्याहता का लाल लहंगा–चुनरी हो, गालों पर प्रेम की लाली हो, माथे की लाल बिंदिया हो, मेहंदी की सुर्खी हो या देवी की लाल चुनरिया हो, सभी तो हमारी अंतरात्मा को स्पर्ष कर लेते हैं। यह लाल रंग ज़िंदगी के संघर्ष का प्रतीक है। यह उत्तेजना, क्रोध, भूख, तीव्र व मजबूत मनोभाव और काम शक्ति को जगाने वाला है। लाल रंग रक्त रंग के रूप में जाना जाता है, क्योंकि रक्त लाल रंग का होता है। गुस्से में नाक लाल होना ताकत की निषानी है। बंदर जितना सेहतमंद होता है, उसकी नाक का रंग उतना ही गाढ़ा लाल होता है। यह रंग सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। हमारे मूड, विचार, काम पर गहरा असर डालता है। उगता सूरज इसी रंग में जोष व उल्लास का रंग भर देता है। गुड़हल, पलाष, सिंदूर भी इसी रंग के हैं ।इन तीन रंगों के अलावा मिश्र रंग, उपरंग की भी अपनी भाषा है, भाव–धारा है। गुलाबी रंग प्रेम और सुंदरता को दर्षाता शांत रंग है। हिंसक प्रवृत्ति को दबाने वाला, स्थिर भावनाओं को प्रगट करने तथा भाग्य व संतुष्टि का सूचक है। पीला रंग ज्ञान, भक्ति व शांति की त्रिवेणी प्रवाहित करता है। श्रीकृष्ण पीतवर्णी वस्त्र धारण करते थे। इसी कारण उन्हीं की तरह इस रंग को धारने वाले ज्ञानी, कर्मयोगी, रसिक भाषा बोलने वाले, प्रखर बुद्वि के होते हैं। यह रंग प्रकाष, ज्योति व प्रसन्नता का द्योतक होने के साथ ही नई चेतना व जागृति का प्रतीक है। रमल शास्त्र के अनुसार यह 'मौसम–ए–बहार' का संकेत देता है। बैंगनी रंग (voilet) आध्यात्मिकता, जागरूकता, संतोष, दूरदृष्टि व ऐष्वर्य की बात कहता है। भूरा रंग कलह शांत करता है। यह गंभीरता, गर्मजोषी, भरोसे और समर्थन की भाषा व्यक्त करता है। जामुनी रंग रंगीन मिजाज का है। सत्ता का प्रतीक है। धर्म व बुद्वि–धर्मपरायणता को भी बताता है। नारंगी रंग मस्तिष्क को स्नेह, उत्साह व उमंग का अहसास कराता है।नारंगी, भगवा, केसरिया रंग जीवन में नया सवेरा लाते हैं । प्रायः सन्यासी भी इन्हीं रंगों के वस्त्र धारण करते हैं। यह रंग आज्ञाचक्र का रंग है। आज्ञाचक्र ज्ञान प्राप्ति का सूचक है यह आभामंडल के काले भाग का शुद्विकरण कर चमक लाता है।रंगों की श्रेणी में सफेद व काला तटस्थ रंग माने गए हैं। सफेद पर हर रंग मेल खाता है। काले का भी इसी तरह–सा प्रयोग कर लेते हैं यानि दोनों ही रंग अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हैं; अपनी भाषा सामर्थ्य शक्ति इनमें निहित है।मिट्टी, खडिया, गेरू के रंग आत्मज रंग हैं। तभी तो देष की माटी शब्द से गीत, गाने, तराने तो बने ही हैं, माटी के रंग ने सभी देषवासियों पर भी अपना रंग जमाया है। इसी कारण सच्चे देषभक्त अपना वतन नहीं छोडना

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चाहते और उनके लिए यह पंक्ति सार्थक बन पड़ती है – 'मेरा रंग दे वसंती चोला।' रंगों की पंक्ति में भगवा रंग आत्मा को परमात्मा तक ले जाने वाला माना जाता है। शारीरिक, मानसिक बल प्रदान करने के साथ ही यह शांति का द्योतक है। साधु–महात्मा भी इसी रंग के वस्त्रों में देखे जाते हैं ।इतना ही नहीं वीरता के भाव को भी रंग की भाषा ने रंगायमान कर दिया है। शिवाजी का युद्ध के लिए कूच करना कुछ इस प्रकार है –''साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि,
सरजा षिवाजी जंग जीतन चलत है।''

रंग हमारे जीवन की सकारात्मकता को भी दर्षाते हैं । मेचिंग करने वाले इसी तरह के होते हैं।रंग चिकित्सा की अपनी निराली भाषा है। विषेष रंग की वस्तुओं, औषधियों द्वारा व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ मिलता है। बहुरंगी रंगों की अपनी भाषा है। एक ही समय में तरह–तरह के रंग–बिरंगे वस्त्र धारण करने वाले बहुरंगी मिजाज के माने जाते हैं। बेपेंदे के लोटे के समान होते हैं ये। इस रंग को पसंद करने वाले लोग बात और ठोस कार्य के धनी भी होते हैं।देखा जाय तो कोई भी रंग बुरा नहीं होता, यह प्रयोगकर्त्ता पर निर्भर करता है, प्रसंग व स्थिति पर आधृत होता है।काला रंग जहाँ निराषा, अंधकार का भाव दर्षाता है तो नारी के आँखों के काजल के रूप में उसके सौंदर्य में वृद्धि करता है, बालक के माथे पर काला टीक, डिठौना – माँ उसे बुरी नज़र से बचाने के लिए लगाती है।वैसे यह रंग मनन, चिंतन की गहराई का भी प्रतीक है। अंधेरे व एकांत स्थान में एकाग्रता बढ़ती है, आँखें बंद करने पर भी चित्त को शांति मिलती है। इस रंग में ओर भी कुछ है – डर, रहस्य, रोमांच, जासूसी, धमकी, कठोरता आदि का अहसास । साथ ही इस रंग में सोखने की शक्ति होती है। काले कपड़ों से ऊर्जा के उपकरणों में इसी रंग का विषेष प्रयोग होता है। काला रंग साधु का भी इसीलिए माना गया है कि उसमें क्रोध, बैर अन्य सभी बुराइयों को समुद्र की तरह सोखना आता है। सफेद रंग की अपनी सत्ता है, अपनी भाषा है। यह रंग पवित्रता, स्वच्छता, शांति, सादगी, कार्यकुषलता, बेगुनाही का प्रतिनिधित्व करता है। सफेदी से ठण्डक की अनुभूति होती है। यह इस बात की ओर इंगित करता है कि मानव को अपने आस–पास से ज्यादा कुछ बटोरना नहीं है, वह निर्लिप्त होकर आध्यात्मिक पथ पर खास तरह का जीवन बिताता है।इस प्रकार रंग हमारे दिल में जोष और उमंग का संचार करते हैं, हमें स्फूर्तवान व तेजस्वी बनाते हैं। रंग विटामिन्स हैं, प्रोटीनस हैं; इसीलिए हमें बल प्रदान करते हैं। वास्तव में, यदि एक खास रंग के वातावरण में हमें रख दिया जाय तो हमारी मनोवृत्ति बदल जाएगी। यदि हमें ऐसे कमरे में रख दिया जाए, जहाँ की दीवारें हरी हैं तो हमें खुषी की अनुभूति होगी ।

सचमुच में, रंग के विविध रूप मानव मन के धरातल पर विविध भावों का संचार करते हैं। कोई रंग हमें उत्तेजित करता है तो कोई रंग हमें प्यार के लिए प्रेरित करता है। कोई रंग जीवन में नया सवेरा लाता है तो कोई रात की कालिमा से ढँक देता है। कुछ रंग हमें शांति, पवित्रता व उच्चता का एहसास कराते हैं तो कुछ रंग मातम के प्रतीक हैं । इनकी भाषा मानव के मानस को छू लेती है और विचारधारा व मानसिकता को भी प्रभावित करती है।

संदर्भ :

1. *रंग – भारतकोष, ज्ञान का हिन्दी महासागर*
   वेबसाइट - hibharatdiscovery.org/India/jax
2. *बहुआयामी महामंत्र (ॐ) णमोकार – डॉ. नेमीचंद जैन*
   मार्च, 1996 : हीरा भैया प्रकाषन
3. *सूरज किरण चिकित्सा – डॉ. अजीत मेहता*
4. *चित्रकार श्री संतोष जड़िया – संवाद ।*